सिंधु घाटी सभ्यता
(हड़प्पा सभ्यता)

1 परिचय

- सिंधु घाटी सभ्यता को **हड़प्पा सभ्यता** भी कहा जाता है।
- यह भारतीय उपमहाद्वीप की प्रारंभिक **नगरीय सभ्यताओं** में से एक थी।
- परिपक्व हड़प्पा चरण का समय लगभग **2600–1900 ईसा पूर्व** माना जाता है।
- यह **सुव्यवस्थित नगरों, जल-निकासी व्यवस्था, मानकीकृत ईंटों, बाट-माप और व्यापार** के लिए प्रसिद्ध थी।

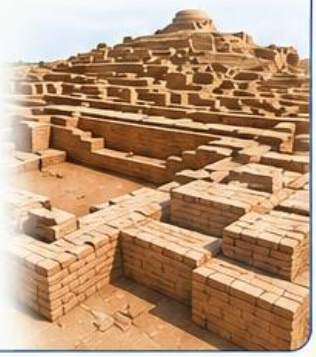

2 खोज

- हड़प्पा की खुदाई दयाराम साहनी ने **1921** में की।
- मोहनजोदड़ो की खुदाई राखालदास बनर्जी ने **1922** में की।
- सर जॉन मार्शल ने 1924 में इस सभ्यता की खोज की आधिकारिक घोषणा की।

दयाराम साहनी
(हड़प्पा, 1921)

राखालदास बनर्जी
(मोहनजोदड़ो, 1922)

सर जॉन मार्शल
(घोषणा, 1924)

3 भौगोलिक विस्तार

- **उत्तरी सीमा:** मांडा – जम्मू और कश्मीर
- **दक्षिणी सीमा:** दैमाबाद – महाराष्ट्र
- **पूर्वी सीमा:** आलमगीरपुर – उत्तर प्रदेश
- **पश्चिमी सीमा:** सुत्कागेन-दोर – बलूचिस्तान

4 प्रमुख स्थल

स्थल	स्थान	प्रमुख विशेषता
हड़प्पा	पाकिस्तान (रावी नदी)	अन्नागार और कबिस्तान
मोहनजोदड़ो	पाकिस्तान (सिंधु नदी)	महान स्नानागार
धोलावीरा	गुजरात	जल प्रबंधन व्यवस्था
लोथल	गुजरात (भागवा नदी)	गोदी
कालीबंगा	राजस्थान (घग्गर नदी)	जुते हुए खेत के प्रमाण
राखीगढ़ी	हरियाणा	प्रमुख हड़प्पा स्थल
आलमगीरपुर	उत्तर प्रदेश (हिंदन नदी)	पूर्वी सीमा का प्रमुख स्थल

5 नगर नियोजन

महान स्नानागार, मोहनजोदड़ो

- हड़प्पा नगरों में सुव्यवस्थित सड़कें थीं, जो अक्सर ग्रिड पद्धति में बनाई गई थीं।
- कई नगरों में **दुर्ग क्षेत्र** और निचला नगर पाया गया है।
- घरों के निर्माण में मानकीकृत पाकी हुई ईंटों का प्रयोग किया जाता था।
- कई घरों में आंगन, कुएँ, स्नानघर और जल-निकासी की व्यवस्था थी।
- ढकी हुई जल-निकासी व्यवस्था हड़प्पा नगरों की प्रमुख विशेषता थी।
- मोहनजोदड़ो का **महान स्नानागार** हड़प्पा स्थापत्य का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

6 कृषि

- कृषि और पशुपालन प्रमुख व्यवसाय थे।
- प्रमुख फसलों में **गेहूँ, जौ, मटर, तिल** और **कपास** शामिल थे।
- **कालीबंगा** से **जुते हुए खेत** के प्रमाण मिले हैं।
- हड़प्पावासी **कपास** की खेती करने वाले प्रारंभिक ज्ञात लोगों में शामिल थे।

7 व्यापार एवं अर्थव्यवस्था

- हड़प्पावासी आंतरिक और लंबी दूरी के व्यापार में संलग्न थे।
- उनके मेसोपोटामिया और फारस की खाड़ी क्षेत्र के साथ व्यापारिक संबंध थे।
- मानकीकृत बाट और माप का प्रयोग किया जाता था।
- प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में मनके, धातुएँ, मृद्भांड, शंख और अर्ध-कीमती पत्थर शामिल थे।
- लोथल व्यापार और शिल्प उत्पादन का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।

सिंधु घाटी सभ्यता
(हड़प्पा सभ्यता)

8. कला एवं शिल्प

- हड़प्पावासी मृद्भांड निर्माण, मनका निर्माण, धातुकर्म और मुहर निर्माण में कुशल थे। अधिकांश मुहरें **सेलखड़ी** (Steatite) की बनी होती थीं।
- नृत्य करती हुई लड़की (नर्तकी) मोहनजोदड़ो से प्राप्त प्रसिद्ध **कांस्य प्रतिमा** है।
- पुरोहित-राजा मोहनजोदड़ो से प्राप्त प्रसिद्ध **पत्थर (सेलखड़ी)** की प्रतिमा है।
- हड़प्पावासी औजारों और अन्य वस्तुओं के लिए **ताँबे, कांसे, सोने और चाँदी** का प्रयोग करते थे।
- **महत्वपूर्ण तथ्य:** हड़प्पावासियों को **लोहे (Iron)** का ज्ञान नहीं था।

नृत्य करती हुई लड़की (कांस्य प्रतिमा)

पुरोहित-राजा (सेलखड़ी की प्रतिमा)

9. हड़प्पा लिपि

- हड़प्पा लिपि मुहरों, मृद्भांडों, पट्टिकाओं और अन्य वस्तुओं पर मिलती है।
- यह लिपि अभी तक निश्चित रूप से पढ़ी नहीं जा सकी है (भावचित्रात्मक लिपि)।
- अधिकांश अभिलेख छोटे हैं और दाई से बाई ओर लिखे गए हैं।
- इस लिपि में प्रयुक्त भाषा अभी निश्चित नहीं है।

लेखन की दिशा ⟶ दाई से बाई ओर ⟵

मुख्य तथ्य: हड़प्पा लिपि आज भी प्राचीन भारत के सबसे बड़े रहस्यों में से एक है।

10. धर्म

- पुरातात्विक प्रमाणों से उर्वरता और प्रकृति से संबंधित मान्यताओं का संकेत मिलता है।
- कुछ महिला मूर्तियों को उर्वरता संबंधी मान्यताओं (मातृदेवी) से जोड़ा जाता है।
- पशुपति मुहर एक महत्वपूर्ण धार्मिक कलाकृति है।

❇ **नोट:** इस मुहर पर शिव (पशुपति) के चारों ओर हाथी, बाघ, गैंण्डा, और भैंसा हैं, तथा पैरों के पास दो हिरण हैं।

❇ **नोट:** हड़प्पा की मुहरों पर **शेर (Lion)** का अंकन नहीं मिलता है।

मातृदेवी की मूर्ति

पशुपति मुहर

- वृक्षों (जैसे- पीपल) और पशुओं (जैसे- एक सींग वाला बैल) का भी धार्मिक महत्व रहा होगा।
- महान स्नानागार संभवत: धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़ा हो सकता है।

महान स्नानागार, मोहनजोदड़ो

एक सींग वाला बैल

11. पतन

- परिपक्व हड़प्पा नगरीय चरण का पतन लगभग **1900 ईसा पूर्व** के आसपास शुरू हुआ।
- इसके पतन का एकमात्र सर्वमान्य कारण अभी निश्चित नहीं है। संभावित कारणों में शामिल हैं:
  - जलवायु परिवर्तन
  - नदी प्रणालियों में परिवर्तन (नदियों का सूखना या मार्ग बदलना)
  - पर्यावरणीय परिवर्तन
  - लंबी दूरी के व्यापार में कमी

पतन का कोई एक कारण सर्वमान्य रूप से स्वीकार नहीं हैं।

12. बिहार का महत्वपूर्ण पुरातात्त्विक स्थल: चिरांद

- चिरांद बिहार के सारण जिले में स्थित है।
- यह नवपाषाण संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है (यह सिंधु घाटी सभ्यता का स्थल नहीं है)।
- यहाँ से कृषि, पशुपालन, मछली पकड़ने और शिकार के प्रमाण मिले हैं।
- यहाँ से पत्थर के औजार और मृद्भांड प्राप्त हुए हैं, लेकिन यह विशेष रूप से हिरण के सींगों से बने हड्डी के उपकरणों (Bone tools) के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध है।

हिरण के सींगों से बने हड्डी के उपकरण (चिरांद से प्राप्त)